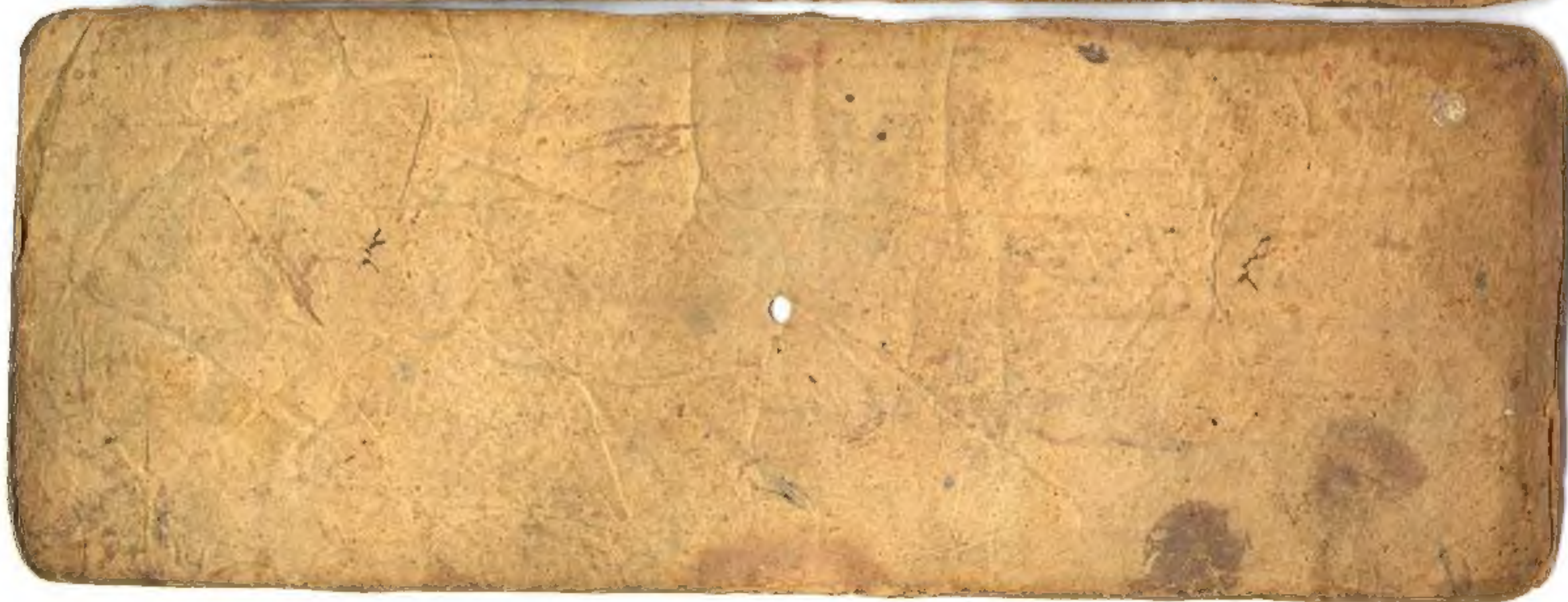






ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

स्वाभिना निषयं च न च यस्या त्वेयं समदय निरुद्वं कल्यता जा नम्रकं क
 र्या नस्या द्वियमसि न सि विनयं सगु न सर्व कारं रज्जु यि च ऊ स्या ये ष्यु ऊ का
 टिरिः मणः यम श्व षः नृणा द्धु वः युक्त न म ध्या न लः यनु ग या ल्मानि रिः नि
 दिं दियाः या नि ल्मान ल वा य वाः धन क नि र्दिं तः यं गं लि वाः य द्दं नः स वि
 रि ल्मा या फ रु ग वाः य म नृ ल्य ध्व न स्य श उं न म धी य म नृ ल्य ध्व ना य श उं न म

श्रीचक्रसंस्वनाय ॥ ॥ गंगा सागर ॥ ॐ नमो श्रीचक्रसंस्वनाय ॥ जाडा ॥
 धर्मधारिणि नन्ददया नन्दकानी
 वन ॥ जाडा ॥ कमलासनरुमे
 का सहजानन्दकालिका ॥ जाडा
 दन ॥ कामाक ॥ नरुटमंशु कुमाला ॥ ४ ॥ जाडा ॥ ॥ गंगा जूयालि

२

॥ विष्णु सत्सु नरुः विष्णु विंम्वारमाकात्रविद्यायिगसुसंरुव ॥ शु ॥ नमामि ॥
 वागीश्वरः सयनसु निन्ददया ॥ विनासायि कुटांग ॥ नः मतो दनस
 यन की नन्ददया ॥ ॥ यितनी
 कूटमधिवयन ॥ ॥ धीमव
 वाययि यहु रवखाम ॥ ॥ सुना सुवनमिगः टडा वनख ॥ १ ॥ रुतयिय

समस्तमन्त्रः ॥

नमादिवजः किं न ह्युद्यमयन ॥

॥ १ ॥ ~~हवागरे नवा~~ मध्यमन्त्रम

सामानिकतकना किं नः पूर्वोदित

दुर्जं वदियं श्रुयन् न गवजयति

उरुनकन युवननः यंदन वृथं च

किं न वापियान ॥ कु ॥ नम

यंच वृद्धः विष्णुः किं नः विष्णुः

नः विष्णुः यंच न वृनि श्रुः

श्रुदियानना वदति किं नमा नसाः

दुर्जं वृथं नमि मितय नथान नल ॥ ॥ जाग

३

वदानसः वाडयदियं वाडयदीयं यन्निजा युदान श्रुय सन वाडयदियः चड वि

दिगारुवनः वाडयदियं श्री श्वं उयन

श्रु ॥ ॥ दिनदवनयं वियन

लन विनया वियः सय जू दन

वं वियान श्रु डा वाड दि विय सा

यकं चकाः सानि कुलानि द्वि ति ति

न वदयं नि ॥ ॥ गु वृ वननः

वि वन सा रगा गिय नि रव नाः सन कूर स ड दन य नि सय नि पूजा श्रु धाः

वयलिहानधिःसकयत्रियुनिनःरुवजनविमंगःनलसगुगुजं॥ ३

॥ ~~रागनालितम~~ सदायं

रदमदिगदमवलःआनाधिया

विनविनध्वनवयिथानःसुन

नाचलिदानदेवीःदानयगियविघ्ननिवात्रय॥

वयायसमयायात्रीरुवयिथान

नःसमयानन्दरुनगिहा॥ कु

माहनिःवीधरुलियंरुनरुका

॥संदिष्टीसवत्रमाद्य

४

कान्वचकःरुवजकायविध्वरुलियाश्यागयागिनीमनीयविवूजनसम

यानदरुनगिहा॥ ॥यववेः

विमदियायिगा१डरुनजसाद्य

रुनगिहायि॥ ॥सिंदनाद

यागिनीःदानयूरु१जानंधनयूरुःजुवधूवत्रयियाःकर्धूयनचनन

यायतःनलसगुगुजं॥ ॥यववेः

सिद्धिमाज्यःजुक्षारुसमयानंद

वाडियालःउमनूयभादःजुष्ट

॥संदिष्टीसवत्रमाद्य

॥ गङ्गा नमः ॥

नाः दुर्गा गिता नमः सायुदा ना ॥ ५ ॥ ६ ॥ **गङ्गा गङ्गा नमः** ॥ गङ्गा
दहनयं च हान स्वयं यशस्य
॥ ७ ॥ ८ ॥ **गङ्गा नमः** ॥ गङ्गा नमः
सप्तमया नंद ॥ १ ॥ विन विन
द्वयया जानं ॥ २ ॥ यं च वृद्ध पच स क व स न य श द वा ज स न य म दि

३

॥ गङ्गा नमः ॥

नद्वयया ॥ ३ ॥ ४ ॥ **गङ्गा नमः** ॥ गङ्गा नमः
नद्वयया ॥ ५ ॥ ६ ॥ **गङ्गा नमः** ॥ गङ्गा नमः
यिमा शविद्यमा नद्वयया विना
ऊवा ना हि सा द्वि सिद्धि दायनि
गङ्गा नमः ॥ ७ ॥ ८ ॥ **गङ्गा नमः** ॥ गङ्गा नमः
नद्वयया ॥ ९ ॥ १० ॥ **गङ्गा नमः** ॥ गङ्गा नमः
नद्वयया ॥ ११ ॥ १२ ॥ **गङ्गा नमः** ॥ गङ्गा नमः

वीभिगतवर्षेण शयश्चिसमंवाविनीगोत्रवर्षेदहा॥ ॥नेमगसंगसिनीदलित॥

ॐ वंभुलशदक्षिषवलिुकादवीधूम
यचमद्वारुननाश्चस्वविजसंरुव
ॐ आगरेनवी॥ॐ आं हूं रुट् अग्न
ॐ कयश्च अरुवगस्वस्वययनिशव॥ ॐ ॥स्वस्वःस्वादिश्चनियूनालःयद्यः॥

घाटयश्चिषुनश्चयसस्यनसलिनयचरुहानसर्वनिष्ठा॥ ॥सर्वयद्वनादस॥
रुगयनयिभावासांजयस्मानश्चदा
दवेनिष्टकडप्र॥ ॥दानय
भाकिनश्चसंसाजगथागगयं
समयानदलुदानयनिसर्वकाश्चसर्वसिद्धिसंयतिभाकिनश्चउत्थेवागथेवा॥

अवतमस्तु ॥

ऊं थ यि वं थ जि यु थ मा णि क अ थ म ग न ॥ ८ ॥ ३ ॥ ए मा ग र ह न वी ॥ य व न
 मं ठ लः य वि ऊं ज ल ह ऋ वः व ॥ कि मं ठ लं र ग न मं ठा य नि यु क
 य म्म या ग र ह क्ता दि य नि यू न ॥ ५ ॥ ष्ट द व लि ग र ह २ ह न म
 व वि घ्न ना म य २ व गु मा ज २ णा ॥ ग य २ णा म २ कि न्द २ कि न्द दृष्ट वी
 नू ह दि गं का र सिं कू वू हं ॥ ॥ यं व वि ऊं जं ग दि जा नः यं वा न ल्यं व यु दी

[illegible]

यं प्रसमिन्नयः यत्रितः यदुल्लिखः उं का ता मृ गत रवे न ॥	ॐ आ हं ग य मृ ता
दमादिग्वलिविन्नश्च श्रीरसकनयी	यूखदवमानिगुः शिवाक्षत्रयूयव
स ॥ ॐ का नादिकसम्वदि	नीतसदनाद्विष्टिरदानयानि
दुग्गुगिसगुतियुदं रुनयिन्नल	वकावल्लिगत्वा ॥ ॐ ॥ ॐ
स्वागयथसंकवि ॥ अतिनअतनकलका	रुवसासः सनूसलुलचक्रनायाश्वज

यजुल्लेखलजालः संयत्रिहत्रिसमूहलुलवक्रयाया॥	कु ॥ ७ ॥ मन्त्रकनयियाः
नवकनगजानिषदादन्त्रकनयि	याश्रवकवात्रादिआत्रिगधसम्वत्र
कनयिया॥ ॥ ८ ॥ गिरिविवि	लखत्रकदिडादिगदिअवसमसा
नश्रजन्तदगसर्वदववजः काउध	दवीमित्रकिवयनसंसाव॥
विशुवनगुक्तगुक्तवायरवादाः विशुवनगुक्तगुक्तवाविश्वारविनिशुवनध्वज	

५	नागलसयसादिलद्वियाडयकावावा॥	॥ १ ॥ हिनिर्सरगुनूवात्रगुन
२	हृः कादिगाललसवज्जवाश्रजन्	समन्तनस्यवंधनः कादिगालर
३	यमान्जानियसंदावे॥ १० ॥	॥ ४ ॥ ॥ १ ॥ कलरविन॥ अन्तरुन
४	गधमगवकात्रसावः नलनूपरी	मितविचिंतकलवंधं २ ॥ ५ ॥ १ ॥ कवा
५	नवजासुगस्यदकस्यफसंसाविगहानामनय॥	कु ॥ १ ॥ विद्यामन्त्रनसवाविह

यमानवस्वानरजागधर्मादिक्तागुत्रुडयदम्भ॥ १॥ यं देवदहस्वमस्तु
 ॐ कुरुक्षेत्रसमाजकागितीसामभद ॥ २॥ नडाईगुहमडां॥ ॥समगु
 ॐ वचनगिलगगधवीयाश्चनवी ॥ ३॥ वाकवजमुत्रुवयी॥ १२ ॥ ११
 ॐ ॥ १॥ रमानर्भुआजयी॥ तम ॥ ४॥ अकात्रनचयवत्रुखकुवि
 ॐ सलउगाधव॥ ५॥ गताईईगताईईगतागताईईई॥ ॥ ६॥

ॐ जगन्निगनजागधवत्रुवजचमदाधव॥ ॥ ७॥ घनगर्भस्वतदह
 ॐ वत्रुसमन्दससाहियवत्रुम ॥ ८॥ ॥सायाददवीनकीगु
 ॐ रसाहियकनूवासलमई॥ १३॥ ॥ १॥ रमानर्भुआजयी
 ॐ गिरुत्रुनविमगिमधुलमम ॥ १४॥ धितिआनन्दमगिधवाश्चकवा
 ॐ शादिआविगमसधमाःनानावसीमदाहवा॥ ५॥ गताईईगताईईगताईई

नमो नमो कुरु कुरु ॥	॥ तिल वल्गु च दुव क य मि मरु वि न वं य द स्मान
नम नमिध नो २ विस्व वज अर्द्ध	च नृ क उ व नृ ट धा नी सा द जा
र न दार म्भ रिता ॥ ॥ वज्र व	म न क उ व नृ म नृ ख ला हा वि न
मान नृ म नृ मिध नो २ क न मि क य	म द ल शु धा म रि म व व नृ मि ल
व नृ म नृ व मि क रि व धि न ॥	॥ दि गं वि दि गं का का स्या दि क स य कि

१२

नी दं विः स ह ज्ञान नृ म नृ मिध नो २ त म मि २ श्री च क स नृ न म स म नृ	॥ न न ज रं गी ॥ हा उ जार
च न म ज्ञा या रिता ॥ १२ ॥	क उ म नि ल र स २ वृ क वा ल
न नः कि या रि व रं स नृ नृ ध र यी	दे गं न ना ॥ कु व न न न म नृ
न म भु या न स नः म कू ट क स	स व न म य म न रं द नि म नृ का ना २ स म वि ला रि नी व ज वान रि

॥ १२ ॥

रुदातारियातामृता॥	मस्तुलिहयनः	वसुसुदममनः	कर्पुनरुवयिनः
वामाशमगमानिमावयविवि	निकदाः	मत्रसुमुनरुवनिता	
॥ मिययमसुखठकः		मयसामवययिसयिसुत्वर	
वकावाशहमाविनाहिनीः		जवावादिदुक्तविहृदषले	
मिषुन्धमा॥	॥ मडागिनितावः	जकाविशोडलः	मममममम

१३३

निमृताप्रसमयाज्जनदः	रुनिमवाः	ममुनः	सत्त्वभावजवाजहि
॥ १५ ॥			मिहवावावयिआगिलीदरु
कवादिशकमलेकुलिसंयन			कहूवियान॥
कुक्तातिनः	स्वनरुन	विजि	रतावासरुत्तुवियालः
मंयिआयि॥	॥ कयद्रुआगि	स्वनरुवायि	शमानिकूनवदियालडा

दिया न समान ॥ साहस दृढ लयालः क्विथि चाना २ वदु सु र्थ इयियक
 मरुदादा ॥ ॥ रनयि न्वजालि ॥ सुमकु इव विना २ ननय ता विना
 जड हयन विना ॥ १७ ॥ ॥ रनन न्वजालि ॥ विविह
 विह नूनः सायान विमगित द ॥ न २ द वा स न ग म र व न ह यु द
 नूना ॥ ॥ ॥ नावे न न मा मिषी सं व न विना २ व ऊ क गि नी ल गि न मा स र

१४

साभंगमा ॥ ॥ व ऊ वा ना हि आ वि ग म क ल २ क वि म वि न विल र
 लि स स न र विना ॥ ॥ ल क ॥ द द न वि त्व मा स म र क व र क
 नू म नू व मा य ला य त वि र व न ॥ ॥ द द म र ऊ धा वि या त्वा नि
 व ड व द न २ त म र स द व ग म म ॥ द यु वि ना ॥ १८ ॥ ॥ र न
 न द म म उ ॥ व न नि नि दि ग जा ल नी ल स म द द २ क क न वि न य ति रि व

विविह वि ॥
 प्र ३ न नि नि दि ग जा ल ॥

मवदना॥ ॐ ॥ गता हं हं गता हं हं हं जातञ्चनकारनाया॥ ॥

निविदिगः यमदृगि साहिमम

मथ॥ ॥ हनिदलवसा

इगि मयः ययदनध॥ ॥

सत्रजगम विवीदिग वनरुमदायकं॥ १८ ॥

हृश्यामखमवात्रीः दीपुअन

ॐ वृवडमात्रा १ नालविद्यन

विविदिग वनतमो वि लंकु गद

॥ रजगखठकान

१८

अज्ञानिनीदिग वास जानः स्वर्ग कीनमालसंशम १ नगा ह्वरमाहव

विनयासाः विरुवनवायाः जूव

दमहा नायधः जातल लु र

यिग विन विरुमः महाकाध

उद्धय रंयः दष्टा क वाया विरुगि कि नत १ र्थि दीग अर्द्ध नाक क नतय

वविना॥ ॐ ॥ नमागिगीच

यद्धु गितार विम्बनाथ विम्बवा

नाया॥ ॥ अगि वृषनाग

अज्ञानिनीदिग वास जानः स्वर्ग कीनमालसंशम १ नगा ह्वरमाहव

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ हनयिष्ये नमो वज्रः वाङ्मयिदासाश्चीवज्रद्वी ॥

ॐ यसादः श्रीदन्त्रायाया ॥ २० ॥ ॥ सारनामलक्षणानिर्गण
ॐ वज्रवधूतदन्त्रवनायाश्चीद
ॐ ज्ञानयादिदवाकलितः ज्ञानंदा
ॐ नमो संयुक्त ॥ ॥ पूर्वसिगाहिरुनतिर्कंकलदन्त्राश्चसुयिजुतस्त
ॐ नृणां पादा विजगन्तं दविनमवेरुध्वाः चकानिहं दंरः संयुक्ता वाधिवृदं दिगुनजले

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ हनयिष्ये नमो वज्रः वाङ्मयिदासाश्चीवज्रद्वी ॥
ॐ यसादः श्रीदन्त्रायाया ॥ २० ॥ ॥ सारनामलक्षणानिर्गण
ॐ वज्रवधूतदन्त्रवनायाश्चीद
ॐ ज्ञानयादिदवाकलितः ज्ञानंदा
ॐ नमो संयुक्त ॥ ॥ पूर्वसिगाहिरुनतिर्कंकलदन्त्राश्चसुयिजुतस्त
ॐ नृणां पादा विजगन्तं दविनमवेरुध्वाः चकानिहं दंरः संयुक्ता वाधिवृदं दिगुनजले

॥ २१ ॥

॥ ८८ ॥

॥ चक्षुःकुलकं शिलायकस्य स्ववत् ॥ शिवः शीव नूतनतमिदमात्म
॥ शिवश्चक्षुःकुलकः शिलायकस्य स्ववत् ॥ शिवः शीव नूतनतमिदमात्म
॥ शिवश्चक्षुःकुलकः शिलायकस्य स्ववत् ॥ शिवः शीव नूतनतमिदमात्म
॥ शिवश्चक्षुःकुलकः शिलायकस्य स्ववत् ॥ शिवः शीव नूतनतमिदमात्म
॥ शिवश्चक्षुःकुलकः शिलायकस्य स्ववत् ॥ शिवः शीव नूतनतमिदमात्म

॥ ८८ ॥

॥ ८८ ॥

॥ स्वमजिनपुत्रादः ॥ ॥ वज्रवायुः ॥ आश्रितानसंवत्सराः नाचोयिव
॥ विद्वत्तत्त्वज्ञानं ॥ ॥ विद्वत्तत्त्वज्ञानं ॥ विद्वत्तत्त्वज्ञानं ॥ विद्वत्तत्त्वज्ञानं ॥
॥ तत्त्वज्ञानं ॥ ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥
॥ तत्त्वज्ञानं ॥ ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥
॥ तत्त्वज्ञानं ॥ ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥ तत्त्वज्ञानं ॥

तिरयममुलाखविश्ववदः स्वयमंशुवति ॥ ७ ॥ नूनंभूतका जू	॥ ७ ॥ नूनंभूतका जू
नृणां हंकावनावयिमावतिल	वानुमिश्रकिमयदयातिवदहा
पृथ्वीः कितकननिचकनकगिनी	॥ ७ ॥ ॥ जयं २ हाउ जू रहननस
ससा २ क नमिदयावद्वैदेसध	॥ ७ ॥ ॥ जयं २ नोद समसात
मिन्न श्रीवमोडनवमिलमाला ॥	॥ ७ ॥ ॥ जयं २ बाखहंः कयमंशुसावश्यन

१०

ॐ	मामि अहयवाक्यवि ॥ १३ ॥	॥ ७ ॥ नूनंभूतका जू
ॐ	दनीलः दमिसमयदा २ याकाल	कलेनसमइ निः कालाकलनस
ॐ	माकूला ॥ ७ ॥ ॥ जयं २ अखल	मूनममवमिः स्वमयागकलन
ॐ	दीरुगमननाथः कगनयाविन	महाकाउनाया ॥ ॥ ७ ॥
ॐ	मिनीदिनः वामजानकः दानवदयनः मिनीनादना २ क क द स हर्यकनः जू	

२५ ग. सि. ४॥

किञ्च विष्णुनिहता ॥ ॥ विष्णुदिविहमयनामनः दक्षिणदहनः सुविनाश

उद्धातिस्त्रिनादिनामयः सद्यकिञ्च ॥ नः विष्णुद्वैता ॥ विविदिच

लोहवधविष्णुभिः दिव्यतले ॥ सुखमाभीरुजगत्वादिनामयः

यमिः सिद्धिवल्लहलदायकः ॥ ४॥ ॥ जगत्तद्विहवस्य ॥

जगत्सिद्धसमयः दिव्यसुखस्य विविदिचत्वमधिपकूटविष्णुनिहता ॥

॥ ५ ॥ नाययिष्यः श्रीः ज्ञेयविनाशकनामो ज्ञानन्दविनाशयिः ज्ञेय

॥ ॥ ज्ञानमद्वैतः विष्णुमया ॥ दक्षिणद्वयसुखा ज्ञानिगताः ज्ञेय

यमहासुखः ॥ विनाशकः ॥ निःसुखस्यैकनामस्य निदिनः स्व

मिः गङ्गा निवासः ॥ ॥ ज्ञानमय ॥ पुनर्द्वयनिविद्विष्णुद्वैतादल

विनाशियनाथः गङ्गादिनामि ॥ २५ ॥ ॥ रक्षासिद्धिवस्य ॥

सुखं न दद्यात् न श्रवणं न कर्णोक्तं दद्यात् न श्रवणं न कर्णोक्तं दद्यात् न श्रवणं न कर्णोक्तं

॥ नाना न त्वादा न नो यत्नः क
लान् नो यत्नः सवदन्तः किरुवन्तः
यगिसर्वरयदन्तः पुठयिम्
कादिः वादिगयादः सर्वसिद्धिमाकुरु लदं ॥ २१ ॥ ॥ दिवाधी २२

॥ सुकल ५४ ॥

॥ सकलजगत्समस्तस्य विनाशश्च न यत्नः कर्णोक्तं न कर्णोक्तं न कर्णोक्तं
य ॥ सत्यं सत्यं कर्णोक्तं न कर्णोक्तं न कर्णोक्तं
न न ॥ ॥ दवी वा वादिग
न विमन्त्र विमन्त्र ॥ ॥ सक
न विमन्त्र विमन्त्र ॥ ॥ सक
॥ लवा लव द्वा द वि वि वि वि

अथ ४॥

न कनकाः रजः चंद्रमखजुतिदिकमानधवा ॥

आविधयकारमिग

वचाययिमानः काविनायिविग

मदाशविश्वकलिभाः जुह्व

वृद्धाशकाः द्यायुचमखठ

मदा ॥

॥ शुविभावीवदि २३

चलनायकः विनियकमदावी

मविनाशकनूयमं मीनः वीनवी

लवनेः मुंजयीसयावसंलथला ॥ ३१ ॥

गलनामिद ॥ अरुपलेन

ऊनः अद्ययअनयमः गगनाकमलऊध्या

पिगाशुन्यगाविनासियः वि

यादवः यानविंदुसमकदिगा ॥

धु यानमामिनीलालम्हः निव

कनखलावदुदुल्लेखसंका

दिगा २ सत्रदत्रंदुसमः नऊयका

सिगः ऊनऊननुसमव्यापिला ॥

॥ खदयाकागवनः साधिव

यकवनिः मयूमल्लखवनिता २ निमनदुदयाल्लेखध्यापिगाः अदि

नीसिद्धकृतमयसाधना॥

शतनन्दकसंख्या १ युवमास्य वि
गतसीयाचि ॥॥ ॥ देव

नन्तकारिसिद्धोपायनंगमाश्रयी

वधनः युयुमसासुखजानक ॥ ३२ ॥

॥ अतस्तद्वयवमासतद्विद्वत्सासुखजः च य

वमास्यः नक्तदिनमहासुखस

ककात्रचक्रधीचक्रसंखलः

हताडादियात्ययूहमिनीजा

॥ रत्नमयसाधना ॥ ३३ ॥

ॐ सुवतकलितमयगिज्ञानमायनयवर्गि ॥ ४ ॥

वलितावर्गि ॥ ॥ वलिसद

॥ वरुविद्वन्मयसुद्वन्मय

मय ॥ वरुविद्वन्मयसुद्वन्मय

कडवाकिनी ॥ ४ ॥

॥ नाचयिवकसुखयवमास्य

सुविमनदमयकसंहायवर्गि ॥

वर्गि ॥ ३३ ॥ ॥ रत्नम

लिदवीशसिधितियायुतीक

॥ रत्नमयसाधना ॥ ३३ ॥

वर्जिता ॥ १४ ॥ २० ॥ मरुता ॥

पुंदरीः श्रीगुरुनयनियुय ॥

॥ यत्तु ड रुम पश्चिम दक्षिण दिग्दवी २

आदि निदिधियनिः च उमि कंवा

ऊनि ॥

॥ वहुत्रादि वारुत

रुलं मुदवी २ तितिन मुदवीना

वर्गिदवी ॥

॥ दक्षिण नवनी

२०

०० वृक्ष ल गह २ वा उ म झागी

नीः समन संख ॥ ३४ ॥

॥ मरुत निदिधियनिः रुनाथ वलः सखा चित विजया २ वंददा संख न धात्री ना

२० ॥ मरुत निदिधियनिः ॥

गवा सदरुनयि ॥ ॥ अतमा मिश्री संरु कमाना २ उगदि म्वत्रीः उगगलुन

गुवव कायिना ॥ ॥ यस्तु कथ

२ गुरु यत्र मरुत नया रशी धः

मिषा गुरुन ननया व म उ ल वंरु

ना ॥ ॥ उगगनाथ उगगनी

लेजना ॥ ॥ २ वृक्ष मरुत विसा

वर्ग दिगनी नंरुता ॥ ३५ ॥

॥ ॥ मरुत निदिधियनिः रुनाथ वलः सखा चित विजया २ वंददा संख न धात्री ना

नमसि जिनद्वयमतिशयप्रसङ्गुलसायगमिदत किल्लः अवागता
 थप्रयदाता ॥ ५ ॥ विजा
 ददयनमासिवृगमनलोके
 यलिकमनायुदपसिचूदाम
 प्रकासिगवाधियात्रः वासकमलधनराथरुक्मसुसमंगः प्रागदुसुव

२६

दानिदइस्वरयद्वना ॥ ॥ हूं हूं रगतति काया रगततिः नमामि श्री
 वृगमलदवंशनमासिस्थीनल
 ॥ दगनुमिद्यागिगमनदन
 श्रीप्रलमारुवसिप्रगगद्वयाया
 ॥ रक्तमरुमवि ॥ नमामि शक्तिनक्षत्रुकवंदकचक्रुवमनुरि आप्रिमिग

नमामि शक्तिनक्षत्रुक ॥

69528

॥ ४८ ॥

वाममहाकात्र २ समधमधुलमात्रयकलितधिया ॥	॥ मृष्टिस्तंदावला
यादिस्रदियायिता २ अशुरय	वक्रका विद्रुमिगहनता ॥
वक्रवयसाप्रदागरुनयीया २	गुनचवनमादृसि द्विवयसा
या ३ ॥ ॥ ॥ ॥	॥ गजस्रखलितयमिमायव
यवतनित्याधियजुगिगहखत्रा २ मदिमूकात्रलाहनता ॥ नूविदिल	

३०

नरीकासा ॥ ॥ ॥ ॥	गमालिखविद्रुः सात्रियादयः सात्रियाइखविनासदा ॥
सात्रिया सात्तामात्रसंक्राः मय	वयमइखविनासने ॥
यवधुवानाकूयवक्रः स्वमि	द्विगयात्रददिनकनाशमसल
वनरखलाहः स्वयवकवगिः	वामा ॥ ॥ विद्विगसकल
कलियसाः ऊठाशठमनिमहि ॥ २ ॥ वादवनवविगनंकावन	

२४५॥

सःयायनमिनिमिनिवाकंन॥	॥नलोतनविमनलो क.मिमास
खिकमस्वअतिशुंदनशदि	तादत्यागमसस्वदातानमोशु
दसमाधियमी॥ ३८ ॥	॥हमदरमामयुत्रिययिब
नाइयनिकुनालाशसकनय	ब.वेन्दिनयादं॥ के.ममि
आदिदूहपीमरुदुमाश्लजलिर्वधुनियमनिहखबा॥	॥

३९

२४५॥

कंकमनूचिवागुनचिबदिस्वमाशु	न्यागलिंनकदूवाविदाजा॥
॥विस्वयाविस्वमकनकादवा	मनसाशविस्वदियाधिकथी
यंगुनखयंशु॥ ॥सतगुन	यनमादिविन्दुआलावि
माओतिनदगीनयवनकनिम॥ ३९ ॥	॥हमदरमामयुत्रिययिब
मिशकिनयसिवागुलयंशुशुवतन	गुननयवमयागुवागिहबा॥ ४०

॥ नमो नित्यं जिन चरितं नमो नित्यं जिन चरितं ॥

॥ अथ नमो नित्यं जिन चरितं ॥

महाभारत नित्यं ॥ ॥ अथ नमो नित्यं ॥

सुलभाभारत नित्यं ॥

नमो नित्यं जिन चरितं ॥

॥ श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

महाभारत नित्यं ॥

सुलभाभारत नित्यं ॥

॥ श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

महाभारत नित्यं ॥

॥ श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

महाभारत नित्यं ॥

॥ श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

महाभारत नित्यं ॥

॥ श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

महाभारत नित्यं ॥

॥ श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

महाभारत नित्यं ॥

॥ श्री लोकाय नमो नित्यं जिन चरितं ॥

कत्रसमान ॥ ॥ यच्चैव कविद्विधा यत्रः दक्षिणवत्तविदलियालश्रव
 णिमयस्युकासत्रः उरुत्रस्वभ
 नादाः निरिखयंकात्रियाशकाय
 लः गगनकूदं ॥ ॥ नूयभ
 यर्मधामखनिशकध्यामधुनचर्याः माडातिः वादत्रयकासहायित्र ॥

३३

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥ ॥ रजसदिदृश ॥ द्विनु कप्रकमस्वः गगनवदधुश्रनगन
 मकूटकशिः मिनिभावेता ॥ ॥
 श्वकुनसिश्चिनुवधुव्याधि
 नकनवजः विभासिगदग्यधि
 वायि ॥ ॥ नूयिमधुलमाग्यः उदिद्यात्रसमनेश्वथनयवववमनग

कल्यः विद्यं सति दवीः अनुरूपवहाधववदायति॥ ॥ अतिगाहवम
 धुलः उदयानिधिः कल्यानवमी
 सल्लागध्वनिः यद्वा ग्मनववदा
 माः चकीकूधुलकधुध्वनीशम
 वदुतनसिलसावा॥ ॥ सत्ततध्वनिकुतनिदवीः विवहितसव

३५

॥ ३५ ॥

अरुवाशयीवकुआमिनीचरतसिचामः गमवमिसमवसंवडा॥ ४५ ॥
 ॥ ॥ रजःगवसुता॥ सायाउ
 याउयद्वादिगीयाप्रमियावाप
 स्वमाहद्वादिगीयाप्रतिवअ
 विविशयश्रुसमवविश्वदानयभूदक॥
 लविन्दसावृसनिलोश्माहमा
 गकु ॥ यमसंसात्रजसात्रः वागाह
 मा॥ ॥ जनसीखनचधृईक
 ॥ सहकुखरात्रयउतमरातधनि

एवमुक्त्वा

याश्च स्वयं सव सखर्ग सव नत्र ॥

मउमिनिदवीरुवकनावा ॥

वृवसायनिः संसमावृषाः कन

रुवसादखविः वृखवादान

॥ ५ ॥ ॥ हं हं अष्टसमसानः निववावसादिनः अष्टसवगमयति स

॥ अष्टवृष उदयवृषा ययुषादाव

४५ ॥

॥ रजगरे नदी ॥ य

कवर्ण अष्टवृषा विरुड

वृदयवृषा विरुल मयल यम

॥ ५ ॥ ॥ हं हं अष्टसमसानः निववावसादिनः अष्टसवगमयति स

३३

दिनं २ अष्टसमसानः निववावसादिनः अष्टसवगमयति स

यष्टिसं ०० द्यायनिः दक्षिवादान

दक्षिनवावादिः यनथात्रल्यि

॥ ०० धानमवन्दिकादवी

दसत्रसदिनं २ अग्निदिनं कृमालिः मयत्रवादानः नकवाक सवर्न ॥

॥ कृमवर्णन विजयदक्षार

निः अष्टसमसानः निववावसादिनः अष्टसवगमयति स

॥ ०० धानमवन्दिकादवी

॥ ०० धानमवन्दिकादवी

विष्णुवर्जना ॥ ४ ॥

किं हं ॥ ॥ नमो नवीर्ह विः रात्रु वा दानः स्याम वेधु ग अच क सदि गं र
वायव वास दादवीः कं का न व द नाः सिद्ध वा दानः स्वर्ग धात्रि ॥ ॥ अ
कृ न ना ग म स द्याः द म या नित्यः कृ ग यः ॥ ॥ यदि रात्रु द वी श्रु न ता सिद्ध वी ॥ ३ ॥
आ ना धिया नः शु गु नित्य गु नित्य स्य सिद्धि क र्क ॥ ४ ॥ ॥ ॥
नमो नवीर्ह ॥ श्री देव उ ने ना सा द वी श्रु व न ना थं श्र य चै दिन व्या धि मा य

वर्जना ॥ ४ ॥

वैवर्ह द द्या ॥ ॥ नमो निरुणी य द्या रा चै र द न क श्री गु श्रु ख निः व ज क
गिनी स न्य गा ॥ ॥ य चै दि ग
ध्या य ध्या वि रा म विं ड य वा ॥
गिनी द वी श्रु म डा मि लि ला व क
र द्या र्ग म ना न लिः ॥ व क डा गिनीः द नू डा वा या श्रु व द ना थ द द न वा ना ॥

यु	सायिदयिनमदासुखनसःकलिययात्रवडददीरु	ययिजाःअनरुवहान
॥	॥ उड्डनात्रिदिदात्रकमल	संकाह २ ददिमनाहसाःयवन
सैरुदयि॥	॥ उड्डयिचयव	मदासुखनयचसिचमविजंवा ३८
वृम॥	॥ समगुनयसादं	पुथारिद्वक २ याहासत्रिलसंसा
वडासुदा॥ ४८ ॥	॥ समगुनयसादं	हं हं हं ददयवसंसात्रगवृ २६

दाआनिगवदगधन॥ ५॥ दवऊपुस्तननाहूँहूँरननाःननःहूँहूँहूँ॥
 ॥सूनतनवन्दिगचनधवन्॥ कसमविद्ययनदहधन॥
 लवविमकनविस्थस्वगुनकूठ॥ यिरनमहूँरगीदवऊपुस्तगु
 मयुस्वयि॥ ४॥ ॥सून॥ न॥ शिदलकमःवनकसम
 सनंराःसयूकनःदन्डा॥ निता॥ रगी॥ विन्या॥ कृ॥ शु॥ रगी॥ म॥ द॥ वीः॥ म॥ सु॥ न॥ यो॥ न॥ शु॥

व्याधिमा ॥ यु ॥ नमामिनेमात्माः विरुवनेमाताः वाहूनिदवीभीमगार्थविश
 सयनसूत्राः सनवंदितचननः जून
 नंदनवजूमिवचंदननवूवः जून
 गंगाजूमसवागसमिठिनः जूनग
 रूववः जूकृगिनीदेवीः जूहागदेवासनः कृग्यानरजूमसदाहयइनिनः

गात्रिद्विसिद्धिवयसादा ॥
 गकूसमः यात्रिजानवनरनृह
 निनथसः कृगवन ॥ ॥ जूह

३९

निवावनिः जूहगविद्युनिवावनि ॥ गाविस्ववियायिगः तावूनिदवीः जूव
 यतिनंजनकमिसयं १ जूहसमनस
 मकुरुयायसुत्रनागति ॥ ज ० ॥
 धालिनमोलीः यंचरूनयंचमडा
 हाः व्याधुचर्मकठिः रूयिरवमना ॥ ५ ॥ हूं हूं कात्रसंजाताखर्वलंवादलनी

५० क ११८

लसमदहा का वाधियगीमदाका नाशयचासुतनसद र्थरुयिया. लायतवसा
 कयात्रधना ॥ ॥ त्रकयतात्रा ॥ त्रिनिनयताः द्यात्ररुयंकत्रलि
 यमवेदनाशुडईयकालिताः पिंग ॥ त्रकभाः डलसगुरुसाकनूधम ॥ २० ॥
 य ॥ ॥ कत्रटिकयात्राः धालि ॥ त्रखलौगाः नागरयतागकृद्युन
 दालाशनागसित्रसिधः नोपूत्रतागाः अष्टनागा अरुननससा ॥ ॥

किनवनमोत्रिः धात्रितमताः वर्द्धसमभातत्रककविवाश्रयणानूराणन्दवरा
 वाः भाग्यवतकलिसाजुनरुत्रसत्र ॥ ५१ ॥ ॥ रमागरेवती
 अरुक्रुयानादिगाविदिगां तुव ॥ तः धुसित्रसानककुलवाग्यश्रग
 गद्यसुखत्रागद्यमूनंमूनकाय ॥ गगद्युम्वनूवजयल्लियात्रा
 ॥ ॥ हूहूतमासियंचजाकिनीः यचरुशार्तिः हूनदाकिनीगत्रगशरु

(अष्टाशुक्रपुण्या २१ ॥

इतिगतां॥ ॥ यत्तु डर्कनयद्विभः दक्षिणवदुत्तमः विद्युनसायविद्यु
 र्वेदियायशदाकिनीदियिनिच
 सवदनि॥ ॥ सिद्धिनिवादि
 यत्रसुः अंकसदसंरवजजाकि
 दाकिनिः चतुनदवी॥ ॥ किनऊनमिदवीजाकिनीतुइयायसवहा

४९

॥ ४९ ॥

यचरसडाज्जरुनविहखिताशखेभरुठकः वरुचमृखल्लंगमः याववले
 म्मखविहानदवी॥ ५१ ॥
 मंरुक्मानाशममधनकिननमं
 धाखनरुवनव्याधिगाशकिइ
 ॥ वामयसुकधनमुनगुनूलायाशययतासनकासनदहा॥

॥ रयागल्लिगगाज्जययंचनशी
 कासनदहा॥ कुगाददशीमंरु
 खेभवनददिनकनधन॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दाहिनवासकनयनः शत्रुक्षत्रिश्चतुष्पात्रदत्तनवासयुद्वादा ॥ ॥ ज

गहनयाननाथयमदितकद

सादा ॥ ५३ ॥ ॥ शत्रुक्ष

मउलः सदानिवजोरुवः वजव

सिक्तः मानसयनसंज्ञासकनी ॥ ६ ॥ सूरुनिस्सूरुनिहृदं दूगकूर

या २ अरुसिंनसखरुलववय

मयूसद ॥ वजमयी सुमिवियुध

वहृ २ सफनसायः सुमितिवा

॥ सूरुनिस्सूरुनिहृदं दूगकूर

४२

हृददूगकायय २ हृददू २ आनयदारुगविशानाज हृददूः रव्यर

य २ अरुनिस्वदय ॥ ॥ सात

जयाकाव हृददू व हृद २ अयू

दल ॥ ॥ गगनीनिवावधेकवि

वजयंकल हृदालिगा अग्निः वजमनजाली संज्ञा ॥ ॥ की ३ निचमुलना

कवाजिनः यद्विहृडाद्यः व

दिगतात्रयायनः सर्वविद्युक्तगख

सतितामयः वजवितानहृदवहृद

॥ की ३ निचमुलना

॥ ४५ ॥

यत्नः सर्वसत्त्वद्विषयमादत्तकद्वयगतयुवचनतसिल्लगतध्वनियः रनः	५४ ॥	॥ १२ ॥ गगनगह्वरी ॥
यिभिलावजः सुमिखधनन ॥		
उंखवजः कवजः कंकाभनः का		
अनर्हः मसकाभनः अलीयवि		
सर्वद्वल्लः कीलयः कंदूटः पायदल २ उंखज किंयवजधनमूहः कायवाक		

४३

॥ ४६ ॥

चिरुकीत्रल्लः शीवजसत्त्वः आनाधियात्रः अनर्हः सिद्धियदमाद्वरुल		
दं ॥ १ ॥ यद्वदिगद्यत्रकाका		
पाद्वमुगलियनः ममनात्रः		
अक ॥ यद्वसुमसमथानिः रिना		
वमुकः काकदुल्लः ननामिदं ॥ २ ॥ ॥ ५५ ॥ उंखदिगद्यत्रः उवकातनन		

समवर्धुवनरुसितयनी १ प्रोदकनससदाः समनात्रः उदाधियनिगद किलयनी ॥ ५ ॥ का ॥ डरुत्रउक मसालिमयुचिचः डवुको मना अमनातनत्रः सिदुमावतननः वि अरुकाधियनिगनकिनयनी ॥ ५ ॥ का ॥ यश्चिमत्रकवर्धुनीः नागाधियनिमदुनि	नायर्थः नथनः समवर्धुकोः मिदं ॥ ३ ॥ ॥ कु ॥ यश्चिमदिगद ४५ कतत्रयाश्चालाकुलामदासमना
---	---

४५

यात्रारुहासः विकिः खानास्यानमा मिदं ॥ ४ ॥ कु ॥ दद्विदिदिगदत्रः सुक नातनत्रः कर्हकनिहृददाः य समनात्रयुताधियनिः गनकी वर्धुनीः रुनाकयुदाविनीः द्या ना ॥ ५ ॥ कु ॥ ददनवनको नदवीय मदातिर्यः कर्हयिगलः यवउव	यलनादिश्चकवर्कहवः मदा वयनी ॥ ५ ॥ का ॥ दद्विदिदिगद वचननायैः नमा मिसुकनान
---	--

या १ अठ्ठ दा सा ग म न म हा र य दा नं जा धिय ति रा घ कि त्र य ति ग ॥ १ ॥	
क ॥ अ ॥ नो सा त्र य दा दे वीः कृ षु	यित्त पु र रा दं द द ना धिय ति
द सा त्र यः अ त्र य सि न सा सि दं	॥ ३ ॥ अ ॥ दि ति उ त्र य का न्य ४५
य म इ रि नः यि रा त्र ग नः का य न	या २ न सि व त द्र रा स नः म हा सः
म ता लेः ना द म धिय ति रा घः कि त्र य नी ॥ १ ॥	म ता ॥ नो सा यि रा त्र य का र य दा जा धि

मि सा धि तिः या न रा ग हा सा रा द तीः अ म इ ति न सा सि दं ॥ १ ॥	॥ १ ॥ अ ॥ वा य त्र य का न्यः
अ म इ रि यः न क म म ग नः क न	न व द नि र या न च का व रि य म
म म नाः या रा य ति रा घ कि त्र य ति	॥ १ ॥ अ ॥ वा य त्र य का न्यः
य हा ना धिय ति मं ग्री तः सा ला री	र य दा नं दं य म इ कि न सा सि दं
॥ ६ ॥ अ ॥ नो सा त्र य का र य दा जा धि	अ म म थ ति यः म म कृ षु रा वि क ट न

॥ ह्रीं ॥ वक्रोक्तानमदया ॥

38

॥ दहदिहदाहः कृका नालेय ॥

उत्तरदिगा ३॥

नमासिदहाकाधुप्रर आसायनियनयः दानयतिनः मालविद्यतनिवाः		
न ॥ १२ ॥ ॥ ह्रीं ॥ ॥ ५५ ॥		॥ ॥ ह्रीं ॥ ॥ ५५ ॥
मरुमिशुलीसनः मन्मथुल		समस्तिगत्रयनादद्वादमरुज
चडवदनसुसाणः वडवावादी		कष्टजालिगिमा ॥ ५६ ॥
ह्रीं ह्रीं दहदिह ह्रीं लनः सावसयलसंवाधिया नरद्वदा जालिगिमा		

४०

अध्वयसंलवाः नाचयिदानः श्रीः सम्ववाया ॥		वाकविसयधुगकचम
प्रिमुलाः कनगिः ७ मन्मथुलसा		रिगा २ मर्जुयनित कपात्रं स्वधा
ह्रीं यामयनमुवक्तुसिचयवाया		॥ ॥ यंच कितवन्नमकूठजा
लकगाः स्वडमडा जालनस वि		रुषिगा २ जालिकानीद्रियिजानी
ठचाययियाः व्याध्वचर्मा निवासनककूरतन ॥		॥ तनसिनमानालमृष्टी

॥ निर्माता वृक्ष ॥

विदवा ॥ ॐ ॥ अक्षहिमदादवीः पृथिविमाषाः सर्वत्र तसं पृथ्वि वि
विता ॥ ॥ विनवर्धुसोम्य नृ
कसंगानि ॥ ॥ कनकवरे
मलपूरयः लाकसंगानि ॥
इदानीं निद्याः स्वः वरुणाः ॥ ५३ ॥

विनिदवीः सर्वसहयकनः
दद्यन्तः वासकनका निःसर्वक
॥ दिव्यं नका नृविगददा
॥ रत्नमहर्षिनी ॥ निर्माता वृक्ष

४२

गद्यः गतकनसायं वासकसयः यानियन्ति गत विविधं मयगारिणः यचय
ज्ञवाल्गुनिनवर्धुनकुमिनरु
वजाचाकः मनुविन्यामिनः कर्म
वज्रगिरिवाहिमनः यानियन्ति
लक्ष्मी ॥ ॥ यद्वदन्नगतयचः सूर्यसुनकिगाः यचविगतिरुदिगव

यिगा ॥ ॐ ॥ कंकंकंकनक
वज्रिसदिगा यज्ञस्वनीनी
गुनाः रुद्रसमदगनघः विमनद
किगाः यचविगतिरुदिगव

द्वकार्यं रदक्षितदवगतवजः स्वसमस्वभूयाः प्रियुवतसमवहयायविभू दं ॥ ॥ यश्चि सदनगतं संख राजिता रडरुनदवगतवजः विभवजननी ॥ ॥ अलक्ष सामवभूजल्ला यियाय रयव्यविन्यामित विवमयय किताः युनमासिदज	साधिताः धवववनसिद्धिः नसः धाखनादिताः हनखनूयिनीः विदीदवगतः एवतयीगात्रकाः
--	---

५०

॥ १० ॥

सखसिनसाधियगि ॥ ५० ॥ दूयूनाल्लदगयिनल्लववाधिय यनमाहममयययमगुनू ॥ ५१ दिचित्तमनयानवक्त रदगयि धियदं ॥ ॥ सर्वतथागतयूजनयायः धानयासिमः वायवतनूरययूयाग	॥ ५२ ॥ ॥ यविगगुरुगवतः महाम दं रऊनामनगरयवंधनमाचय ॥ ५३ ॥ दिवद्वमहायाननयारुमद हमलगचल्लगुदगथगतल्लववा
---	--

८ वा मा द हि न ८ ॥

दिक्किनः यन्निव्यष्टिगः कसलकूलिसयन्निशमत्र ॥ ॥ कसमडदक
मकूगः शासनिकमनाः जितकून समया आवाक्यदं रमन्ताकूल
वनदय्यसेनेनकयः दमवन्नम तियदहास्रनं ॥ ॥ तमा मिच
कसम्वनायगुनूवाकः दधधः त्रिया रसगुनूवन्ननः कसमय
सादः गुनूरुनसिद्धियदायकं ॥ ५८ ॥ ॥ रमागः मा नसि ॥ वा मा दहि

५९

नः नडयिचत्रही रताम्यविनामायिः महासूलयिया ॥ ५९ ॥ युडयियात्रः
जात्रयियाः सदकानन्दं रसयनाः विनायनायत्रिस्तव ॥
गयनमयनः चिरुविनासा रूपा यवाकचिरुः नूककत्रिया ॥
नकधवयीः आह्वनायिया रूपा आयित्रयातीः गत्यधानी ॥
॥ यादयिवगुनूः यायवसाद ररुनयिवाकवजः गुनसमाधि ॥ ५९ ॥

८४ न ८ ले ८॥

रत्नागाविलास॥ धन धनः इधनः धनयश्च विजिगीता॥ मर्द्धश्च जय कसमनं कं	
इन्मयागमसु विनवन॥ कु ॥ क	नश्च जय धर्मयियं श्व आना नि
कक ह्विन॥ ॥ कुमुनि शनं क	धनश्च ससा कनसिग कसलध
न॥ ॥ आखत निश्चला वयल	मंश्च साग्वा तस दख लाधन॥
जदी शक्ति तजि सगगा शकाय निवन्धन च कवन॥	॥ हं दी य ह्ना धृ क

५२

८४ न ८ ले ८॥

सुगगा शमस्वन संदिग्य नवनस्व॥	॥ हं रुट् आदिन च नवनश्च
युष्मा मासि सुनवन जमिना ॥ ५० ॥	॥ ॥ रं दंगल निता ॥ खदम
सायतः तनतिन कियः सिनवा	साना थिना नः आऊ नदा नाश्च
जूरनवा किमिपु रु सयनाः न	यावमि तम गिदा ना॥ कु गद
वीकयिपु लियं किमिपु रु सन कि क स निना श्च द हि न आ लि ह स दः वन	

सिविकमालागितिनयनप्रतिलानूवा ॥ गमिहसहसलुलःसमि
 वगिनवतायाःअङ्कुल्यधनगि
 लोम्यनृकदायःयशमिप्ररुम
 गथागतददासिचनदवीजः
 रजगतमानुगिनाधिःसयत्रजगमाता

नयावकयाश्कनगिषयत्रःख
 मकूठकमकयालं ॥ गयच
 कदिनाथदवीजःयावनिजयं
 नहिस्थमायिकदिनायुधं ॥

३

हवदाधरितमगिविनयसूत्रतवजःकथिस्थजानूदवीयःगुन्युसा
 यश्चिचियविकालिकिपीनदी
 ३१ ॥ ॥रननादिगास
 गुरुषयमाकविनात ॥ क्र ॥
 दनचगीगवनःनसताहं ॥ गयंकेवद्वालकःसर्वजह्वायंश्य
 ह्माकमकूदागावहदंतगुःमिथुवननःगामितामिजनाःचक्रसिमान

एवमिति मलिग ४॥

मिति मलिग ४॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

बनसदात्रिगुहलकटवन्नयमा ॥ ६४ ॥ ललाटे ॥ किंचित्कलः यलि
गुरुगुरुपूर्वमासायवद्वगुरुः सु
जाययागायलः ॥ ६५ ॥ पूर्वसंस्थायवि
नलाः किंचित्कलः ॥ ६६ ॥ मय्यालकं वल
॥ ६७ ॥ रत्नागरे दयागनमदिमलुलः मय्यालकं वल ॥ ६८ ॥
॥ ६९ ॥ रत्नागरे दयागनमदिमलुलः मय्यालकं वल ॥ ७० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कविर्वचदा ॥ ७१ ॥ यस्वयजुर्नमियः लायनगायनं श्रुल्लयत्रिहासयिः ॥
किनगुहवयन ॥ ७२ ॥ किंचित्कलः ॥ ७३ ॥ मय्यालकं वल ॥ ७४ ॥
समदतवंगः किनगुहवयन ॥ ७५ ॥ किंचित्कलः ॥ ७६ ॥ मय्यालकं वल ॥ ७७ ॥
ललाटे ॥ किंचित्कलः ॥ ७८ ॥ मय्यालकं वल ॥ ७९ ॥ रत्नागरे दयागनमदिमलुलः ॥ ८० ॥
मय्यालकं वल ॥ ८१ ॥ किंचित्कलः ॥ ८२ ॥ मय्यालकं वल ॥ ८३ ॥ रत्नागरे दयागनमदिमलुलः ॥ ८४ ॥

ॐ नमो भगवते ॥

प्र॥ यु॥ ॥ अथ गजावतः सर्वसत्त्वाः सत्त्वसंगदमः संगदिताः प्रलुका
वाजवायजावाः संभवतजावाः ड याइकावाः वृयिनावाः अत्रयिना
वाः संगितावाः असंगितावाः नीव संगीतावाः नामसंगितावाः सच
तसत्त्वमयाः महासदासकुष्यं प्रसिद्धयविमवा ॥ ३५ ॥
॥ व्यागर्गधरं न वि॥ विनितायनचडवस्तुवीदावाश्चकईवेयनिष्ठाम

जंग

ॐ नमो भगवते ॥

पुनराम ॥ अ॥ रामसकवेयाहं हं मदिचडमायाश्वागधस्वमादवदि
प्रह्लादि ॥ ॥ यहायधमडवा यत्रवकाश्चविसमिवायज्जः
वाकवदिरहा ॥ ॥ वासददी नकत्रस्रवयियाकश्चत्रयी
वजानत्रज्जहं निदिता ॥ ॥ कर्हवात्रगत्रप्रमदसमश्च
जयनचनवियसवाद्या ॥ ३६ ॥ ॥ रागयंकरस ॥ कालिगवजानन

नविमभीकूं विरु दावयिः। उं कावनादवयी १ कूं नृवृका लघः विरुववः।	
लिताः ययिसयिः। किममभीः वि	नृवृयं॥ ५॥ यवमजाननृः म
नृमिन्वयव्यावि १ काधाधियधी	मरुवजा १ उं आ कूं कूं कूं उं आ जं ८
कूं कूं कूं काधाधियधी मरुव	जा॥ ॥ कूलिमकमलसंजा
मः सरुजाननृः यवनननमरु विनगावि १ यियमखयठनृ उः वलम	

कूठमोत्रीः कू सुभीमानः ददिनवाम॥	॥ ॐ नृमधुलनायलिः वज
यकवाः कूं कूमा नृभूतनृयक	लिता १ वजखे मसमः ददिन
कनध्याविः वामयं अत्यलचा	यध्यावि॥ ॥ विविरुवला
आरुनमः विरुयितः सुलयी	अनकमनृमिन्वय १ मतगुनृव
वमः कमनृयसादाः नमा। मि १ यनमतिनायदं। उं नं ॥	॥ रनागमी

ॐ ॥ दि॥ का वायि वधिया वा वाः मरु निलक ॥ का वा शयन कयि धिदायी
 वरु यिः कनू ॥ किय यिनला ॥ वा ॥ कु ॥ मयय ऊ कं नू व
 १०० ॥ ऊ यि १ तिं दि सा का हि नान वे ॥ ऊ यि ॥ ॥ ग हि रु नू खा ऊ ॥ ऊं ॥
 १०० ॥ न सा खः मय ना यि व ऊ नया यी ॥ र सा य का नि ऊ ल यु नया यिः द
 वू व ऊ नया यि ॥ ॥ च ड स मय क मु लि मि नाः क यून ला य य नया

ॐ ॥ यि १ मयय ऊं धन सा नि ऊ नूः ग हि रु नू खा ऊ नया यि ॥ ॥ यु ख मय
 ग रु क न नूः शु क्का सु र्ध न न म
 यिः ग हि ऊ स ना य नया यि ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ र ना ग म ना उ
 १०० ॥ लि ॥ स र्ध वू र्ध मं धि रा वि ध्व मा न ॥ नि रु द नी श व ऊ का गि नी व ऊ मं
 धि राः का व य न सिः गि नि ला च ना ॥ ॥ ॥ न सा मि वा रु लि सि धि या गि नी य न

415

मालसविंशत्यक्षिकुंडल

॥ कत्रहिकत्रमालहृद ३०

इमालाः स्वर्गं गमयिष्याः स्तान्

॥ मुक्ते देदीन कृष्णनकाः सयन विश्व विद्या यि

सोक्तः नीयसहस्रतः च उच्यते

२ वक्रसूत्रगन्धर्वः विनविभस्य

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

युनः। किं यद्येहं दृष्टं पापदं न रं वं किल यः वेजय न शास्त्रः कायवा

卷之四

कविगुक्तिवयनि ॥ श्रीवज्रसत्त्वः ॥ आधियात्रः अनुरूपसिद्धियत्रमा
 न्द्रवदं ॥ १ ॥ याम्ययुक्त
 कत्रवयुक्तनित्रय १ अयवाकि
 सुगमः यागकनकां ॥ २ ॥ यश्चि
 वयिहवतः रुक्मालिगिता १ यसागकदधुयवः विवविकुतः तागादि ३

३१

सुगमः यागकनकां ॥ ३ ॥ उरुनविष्ठागकः मचकसदनतनुकेजठासंय
 टः गद्वनमया १ विववजि
 ननयागकनकां ॥ ४ ॥ ददन्य
 वीसंयगवज्रदरु १ अदाद्वयम
 हाः यागकनकां ॥ ५ ॥ नैसखनिलदधुः निवसदनतः वज्रसिखलासंयगवज्र

दक्षिणं शूलं जीवनरुतमनःसदायिहवनःदिगिकादिद्रुमःप्रागवज्र
 र्था ॥ ३ ॥ असायुतनदावलःधवय
 मुखदुर्लभं शयनाभ्यालाःसदा
 र्था ॥ ४ ॥ असायुतनअवलनि
 दःखेदं दुर्लभं शयिभक्तिलिङ्गिलावर्तमदायिहवनःद्रुमादिद्रुमगदा

मंदननःवज्रगन्धारीसंपूटःपि
 समानःवागादिद्रुमःद्याटव
 लारुःसंदननःपाथुमावलिसंय
 मादिद्रुमगदा

३२

दक्षिणं ॥ ८ ॥ अर्द्ध उषीयचक्रःखगसंदननःसदायगिसनासंपूट
 चक्रदुर्लभं शयनचक्रविविधः
 दःद्याटवर्था ॥ ९ ॥ अर्द्ध
 सुमिनीसयुक्तःवज्रदुर्लभं शय
 हाखादिद्रुमगदाःप्रागवलर्था ॥ १० ॥ अशुवनकस्थितकालिगद्वय

विवर्द्धसगदाःवज्रादिद्रुम
 संक्रमाजःतिलारुसंदनन
 दयावमाचिर्गुंयिधिविसगदा
 अशुवनकस्थितकालिगद्वय

२५॥

ननिनददाश्रयसामासीदधकाधमाजं सर्वसयसि कनं साहृदु नदं ॥

१० ॥ अथ ॥

॥ २॥

रं वि ॥ अथि वज्रया मधुगहं

कायाहवः सात्रलियूदुदतः

अचनविलंशरुनयिअनन

३३

महाकाधमायाः अथोयविः

प्रसमदय ॥ ध्रु ॥ हं हं गाठ

हवदयः सर्वइष्टयः किमयहं रुटः यायहवः हं वज्र किलयप्रकलवि

नजाहः कायवाकचि न किमयसि शशीचन्द्रवीन आवाधियानः अन

रं सिद्धियदसा कुरु नदं ॥

२ ॥ यर्च हवनाचनमहावीन

कंदइवन्हाकाधनयं श्वेला

वनामूटसदसगयनं दवाधि

यसिगनशयकि ॥ ३ ॥ दकि

नाधिकाचनमहाविनः कर्नकः

वर्हगहनहिमनयं २ सदिखासनः सदावृद्धः निनवध्विदः इगयनना

38

महोदधेय

सोव॥ १० ॥ ददिनधायनडड्वय
यात्रयंकिश्वुक्तावविममिग्रह
यष्टीना॥ ११ ॥ वामाददसिनवा

三

घनागादिसुखं रूचयितात्रगणनासक॥ १२ ॥ दहादिहदाहकं
 कात्रसंरवाः पुनमाभिगीर्त्य
 नःदानयनिप्रः सर्वविद्यामि
 ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ गरीवदी
 मियकादपः सितांगरीवदीश्वस्त्यायनिधित्वाः वाहकितामाः च धुगुरिषतः

महात्म्यं च नं २ आसायत्रियूल
वात्रनिशिद्विरुलदं ॥ २ ॥
॥ अकात्रगजानेयिमीवनं ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

युनितऊनदा॥ ६ ॥ डंगलयनिकुसात्रमदाकालकृष्यात्रयागिनीग
 मा॥ २ मद्यसांसमस्ययंवविचंय ॥ ७ ॥ उत्तः गृह्णु स्वादं नु पितं नु ॥
 १ ॥ यवर्गजातः तदिमवयत ॥ ८ ॥ दः पियत्रयादः यवदुहं ववाश्
 वृद्धायतिश्वताः सककनागाः गद ॥ ९ ॥ सवदावयः युनितऊनदा॥
 २ ॥ यवर्गजातः विहावववृद्धः ॥ १० ॥ अश्वकयादः यवदुहं ववाश् ॥ ११ ॥

उंउं

युनिकुं सः ककनकनागाः कालीकुलाः नादीतऊनजा॥ ३ ॥ यवव
 गीजातः यवर्गसमनः चतयादय ॥ ४ ॥ कयिदहं ववाश्वावाहित्रकाय
 माहुकमाः कनकहं ववाः वरीज ॥ ५ ॥ वदा॥ ६ ॥ यवर्गजातः अकट
 द्वाएतोः कनकीयादयः कावुहं ॥ ७ ॥ लवाश्कसालित्रकाः महायसा
 अट्टकदागाः यवदुहं लदा॥ ८ ॥ ॥ ८ ॥ यवर्गजातः साएगृहद्विनिऊः यः

30

वाःवरवनकुलडा॥ ८ ॥ रेवदकालिः पादरुवनतः द्वादशचलनं
लिटचलनं श्रवदवदनं नवि कवरुलर्धनसामिः दन्वुरु
वरयदलर्धनं ॥ ९ ॥ अक्षरा गश् ॥ रयोगकासा
रेषी ॥ नियमिसनाथाकियाँ वसवियतिद्रगह्वनुवन्य
दानादिमित्या ॥ १० ॥ खचित्करमाज्ञाः लघयज्यूनाइहमतहिवात्रया

सप्तमिचक्रवर्तनं ॥ २ ॥ ऊं स्वरुतनं स्वरुतः नमिहं स्वरुतः २ अङ्गकाधवाय
 नृद्वयनकवर्तनं ॥ ३ ॥ यत्नज मयाजाः अङ्गकाधवाय २ द
 म्भुजदिक्कुरुः अमिचन्द्रदाम ॥ ४ ॥ डवमाधियमिः यवाय
 कुरुदशवहवाभदकवाटन कवर्तनं ॥ ५ ॥ समिततनाथः
 स्वकगङ्गनथातशहमनकगिधंनुः अङ्गनादिदाय ॥ ६ ॥ ऊं कगनवाजा

मङ्गनकायमिश्रताथदवृत्तगङ्गाः वन्धनकवर्तनं ॥ ७ ॥ नोदुगलसवन्त
 वविद्यकुरुसकि २ ताथमहं यनुः नडिवनियुय ॥ ८ ॥
 अङ्गाधनुवनाथं वक्रायिति चित्वा २ घमाधद्विधंमिः
 समितकवर्तनं ॥ ९ ॥ दृष्ट वननामः अङ्गकाधवाजा २ द
 मादिगङ्गा ममावशासनकवर्तनं ॥ १० ॥ वाङ्मनीवलनीनुङ्गगगव

लिया श्रमावन्तिकुलिमः श्रीगीतचवितां ॥ १५ ॥ सद्यः ॥ एवम् ॥
 ॥ ॥ रत्नानन्देयः ॥ यज्ञक
 लनदसदिगच्छलनश्चन्द्रग
 यूक्तं कीर्तयन्ति ॥ ६ ॥ यद्यथा
 कापद्मेश्वर उवाच कीलयवज्रधरा आहूः कायदाकचित्तलकीलयमि।यी

वज्रसत्त्व आनाधियालः अनुरक्तसिद्धिप्रदमाक्रुरुत्रदं ॥ १ ॥ गदकी
नकनीकाधवज्रमाहाविला
श्लोडकवकरोलवः लक्ष्मनालः
पुलायकसाधकवज्रमाहाडा
कशकालोकवज्रसम्भनः महाहृमिः नागाधियतिगवलीधयर्क ॥ ३ ॥

उल्लुविन वि कुतवजस सा कुतवले दसादि नः ॥ न्यतां रावक नूमा
 रगदावसाभनः अगिदावूनः ॥ ककाधियति गधः सगुसकन
 नी ॥ ४ ॥ साविदिगपूमानः व ॥ उदिकयः ईकावकीलनद
 सादिग सुलनं २ अमदूदास ॥ समनः मदास मित्रताधिति
 यमिगनहीस्वर्यम ॥ ५ ॥ मयचनोदसासाः वजकायासासावित्राः साहादूदास

॥ ०

अतिरिमतादं २ ददनाधियतिः सगतयविदोका सर्वमाजाविन सगुसयं मि
 ॥ ६ ॥ मकायमसोदनः वजविक ॥ माद्यतसावगजनासु मयाषर
 मरुनालिदूदूलः मालाविह ॥ दयमादासस्वलिनयिह ॥
 नगाजयवंजकाया अगिलीः ॥ इनूर्यः रुवसुयवादनः सर्वसु
 स्वदं २ अगिमाधिलाकलः मालाविह ॥ दूकुलदूदीमायायविपूदनन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४४ ॥

॥ ८ ॥ उद्धृष्य च कुर्वन्तिः उद्धृष्टा हि सा विष्णुदाकात्रस्तसून किर्तने रदवा
दिसमभयलिवाला लयर्थः सा
रमा कदक सा सा विद्याः यातावदा
नयः दानयतिलः सर्वसय कव
॥ १२ ॥ मागमाहिजीन ॥ मूयनित्रं कदाः यत्र सपुत्रुः सूनमायभीरुदश

११

सवदधियः सदावजानासासि यिकाव ॥ य ॥ नवूरुनवनिर्वाधमदिपु
रुन्वमसुसवजं शकासुयिम
॥ ३ ॥ अस्मालमकविर्जयाः
दायुहः नाहदिनाचिर ॥ य ॥
यिमनरावशुत्रनित्रं नयत्रमयुः नातं यन्यदायाड ॥ द ॥ किम

१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

कलमस्तु चतुस्रदिनामास्तु नमिस्तु यिश् विमिशामस्तु लचकुणः गनय
संस्तवः स्वस्तु सध्वी ॥ १५ ॥
मिः शुभितिनवध्वस्तु यस्तु यस्तु
याधियमिः शुभितिनवध्वस्तु यस्तु
२ ॥ यन्मगाधियमिः लाकालमवध्वस्तु नमस्तु यस्तु यस्तु ॥ ३ ॥

॥ २ ॥ गस्तु नदी ॥ पूर्वदिगंय
काधः काधवदना ॥ १ ॥ उस्तु
नकाननरिमः उस्तु यस्तु यस्तु यस्तु
३ ॥

१२

यममिस्तु नः लोत्रवध्वस्तु यस्तु यस्तु यस्तु ॥ ४ ॥ यस्तु
यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु
५ ॥ कास्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु
यस्तु यस्तु ॥ ६ ॥ यस्तु यस्तु
यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु
७ ॥ यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु

यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु
यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु
यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु
यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु यस्तु

॥८॥

नंदनिगतितलासा ॥ ८ ॥ द्वादशावित्रं महाकायवदसंजाकिर्न्याद
दीप्तालिङ्गधाराश्रीचक्रसम्बन्ध
लिङ्गा ॥ नं ३ ॥ द्वादशा
वर्गशतकूटकशादिगोविता ॥
॥ बुद्धकथाठकाददितकवगिरशुठश्रवतससाहिता ॥ ॥ शु

नं ३

॥८॥

ऊर्मलमायकायवसन्गिरवजसंघीगद्युसाहिता ॥ ॥ सगठ
वृचवधालिगंगधविशारव
नं ॥ ॥ श्रवण
यः धर्मादयायविशुभिन्नश्रव
धायुदियकमलवन् ॥ ॥ इटगावतुयः हृदयकमवधियच

दुतमय २ नचय नसादन सोचय विदं ॥	॥ आगधर नसादन ००० ॥
नचये मुनस सादय ॥ ॥ सुव	नलवकः मिश्रक २ निलनग
सदयक विमुदि ॥ ॥ यनय	वधिल्लाका २ नतुन नमुव
यनसय ॥ ॥ लाका मय	वतिन मल २ नलविव डिग सि
दिनय ॥ ॥ गसाग नय	चतय २ नवय नच निचयुग वि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥	मुदि ॥ ॥ यत्र सनधर्मन सयव विमुदि २ मुधलव जलम कुतुम	चतुगममनः सिव सदकाः व
	॥ ॥ ॥ श्यागह वी ॥	सावममनः प्रयक वृकः
	सुखिनाम वाजिनमया २ गः	२ ००० २ मजकः सवव
	चनिगमयाः गदकनाम ॥	
	वायु वादसदिगं विदिगव लिदवी तिल २ ००० ससमनः च विमं वि	

शयनः नवयिः सहजानदयः ॥
 कालाकूलाः कंधाटकनामश
 सिङ्गनामः चूतकट्टिका ॥
 वंदमयाः वरुनदासाश्लक्ष्मिणा
 मदायम् ॥ ॥ धावमसानः यकमिष्टकाः अन्नकनामः यवनमयाश

यकंदकलियायाः वलिनमयाः
 कवंकसेववाः वरामयाः सव
 जलद्रुहाः संवयावनामयु
 नामः कवकलवृद्धाः युनिनमया
 नामः कवकलवृद्धाः युनिनमया

नं

॥ १० ॥

किञ्चिद्विद्यायाः अन्ननवृद्धाः कूलिकनामः वचनमया ॥
 दमरुजाः द्वादशमनयनाः चड
 रनयिकुह्याः नारवद्रुसल
 दमना ॥ ११ ॥ ॥ ॥
 कलाविशेषमयिनावकमः वायन ॥
 वृक्षवदनाः द्वादशमुञ्जानार
 नाः कालिल्लिखित्युवाययी
 गजन्धालिगयुमागाविः वन्द
 कु ॥ १२ ॥ कयियालः दंडदंड

रुद्रं वक्रः कर्तुं शतानां विद्वान् मोक्षमस्तु वल्लिभक्त ॥ ॥
 तयो वक्रः कुः कामं वक्रं दत्तं यत्
 यत्ना ॥ ॥ मित्रयः कर्तुं क
 कः समाकृतवयनं ॥ ॥
 नरस्य मासः मरुतु विन श्रुतास्त ॥ ८३ ॥ ॥ रवागवलिम ॥

॥ ८॥

॥ ८॥

विश्वय विश्वय विनः पवन संज्ञा ग्यः क्वचयि चंदानि निनाहिकमः
 अरुददयि जित विन्दु मणिः
 सविस्त्रा मस्य यमं ॥ ८४ ॥ तमी
 त्वन विस्त्रयं शय विपुद्रुम
 ऊज्जानन्द मय हान नृपं ॥ ॥ वक्रयज कासक कू सवृत्तन नः नातस

2

वचनसिद्धयधियागमाडानिसूत्रवचनः कलकलमावृत्तं बद्ध सर्वनं	॥ ८४ ॥	॥ ८५ ॥
कथिसंशुद्धयश्चाद्वः मधुलना	॥ ८६ ॥	॥ ८७ ॥
ऊर्गमनिवासियाद्वः ॥ ८८ ॥	॥ ८९ ॥	॥ ९० ॥
थागमावयः सुधधमागने वासादस मधुलं मूर्धसं ॥	॥ ९१ ॥	॥ ९२ ॥

॥ वरुण कर्म ॥ १॥

कृपायुत्रहस्यमनसानृत्यंयभीसयचुन॥८५॥ ॥ रागमवा॥ वि
लकसवायविःविधूविम्वरुं
क ॥ नमामिजंरुननाथव
विनःवकवलादिदहिमा॥
द्विमुकवकमखडल्यलमंकलीआहिमा॥ ॥ सूर्यकवयविः॥

८९

॥ वरुण कर्म ॥ १॥

विजयनकंरुवसवकनःवकलिखहिमा॥ ॥ याचादिदीगिरुमा
मिरुजातिरुखववहूतिगऊरु
रागमवा॥ वृद्धआगम्वनःसिहा
नवदन॥ क ॥ नमामिदगम्वन
नआनिगमा॥ ॥ ददिनकवनमनःवासवन्वनिशूचकववड

॥ ४८ ॥

वन्दुडवावा॥	॥ वज्रजकिनिध्यावडाकिनीश्वरगजकिनिःवः
दात्रजकिनि॥	॥ सिधिनी
जकिनिदियिनिःवडसिकवा	आधिनिःकम्बुडवाकिनीश
दुष्प्रसन्ननवश्रीकगाम्बल	कनि॥
रगगत्रालिग॥	गद्विद्वद्वक्त्रं
अयविद्याठकः	वदिगचवम्॥ ८५॥
ककात्रसडागरगजमस्वगधयमिज	

८२

लिधयदह्म॥	॥ नमामिनुकमस्वकाधवायाश्ववकनीवव
विगत्रकम्॥	॥ वट
सल्लवास्यागश्वर्वागधवा॥	॥ मयसालवायुचर्मल
आदवाश्वदमादिगमावविध	सनविवा॥
ववाविद्यतवितासनश्वर्वागिह्मकात्रवज्रगीता॥	॥ सिद्धिसिध
	॥ ८६ ॥

॥ ८६ ॥

८५॥ ग० ८५॥

गमनाद॥ यागवकानगत्रज्वाधियात्रशसिद्धाकागिर्वधूदहनलदद
वा॥ कु॥ नमामि श्रीलाकरव
यज्जगदयाधिया॥ गदनि
नैतोऊदगधर्वदिगचनन॥
श्वाधियात्रिदइषदवध्या॥ ॥ सुखावगिधुवनधर्मसुखाश्लीक

६३

८५॥ ग० ८५॥

खनजलजलमगत्रध्या॥ ८६॥ ॥
द्वकविद्याः चन्द्रस्यरवनविः
यावलंककः साहिगमीस्वनिन
सयत्रविद्यायिगः कनूधमतयः
नमामि शगज्जवर्मविधुविताः वाद्यवर्मस्वउमडाशमंधालिगध

॥ स्वागरेववि॥ नमामि श्रु
खकनिगज्जटाशयचवकव
गन॥ कु॥ गनाकं गनाकं
सत्यउधाननगीसुम्वना॥

नेमासिद्धिर्वैदमरुधा

अथ यस्मादिह ब्रह्मसूत्रं प्रवृत्तं ॥
यिः द्वादशैकैर्वैश्वदेवैः ॥
संगमकथायां ब्रह्मसूत्रं ॥
स्वर्गः विस्ववित्तायि नित्यं च ॥
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥ १० ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

58

[illegible]

65

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वासुदेवाय नमः ॥ दत्तकः कः किं श्यायनः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दत्तकः कः किं श्यायनः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५५
५५
५५
५५
५५
५५
५५
५५

नूमाकदवीर साद सागुसा मविडं जननी ॥ ऐ ॥ ॥ २ वागनी ॥
 वद साक सलविका सिनः स्थि मिलाखनः क मय यियवदधु
 समदसा रचकुन वदनः कव वयदवननयः य म नृखयका
 सिता ॥ ऐ ॥ नूमा सि रथी मदा मं रथी सदन गुध नाय
 सनं गुनूरु सागिदहन नृन वनयुदः सर्वरु हान निदिया वंगमा ॥

६३

॥ यथमक वदयः वज्रवधायवः मदा जालिगमः दाडिता रदिययक
 मयनः निगिय हाननः चः वगु थल्व मं सर्वः वनयवा ॥ ॥ म
 रुयः लु ऊयागः लुवन वमः च यः वलुथ वामयुतयूरु का र
 मल्लमकूठ युक्त लिग किं विव वमखगम नृचिव वाप्र ॥
 निद्विद्विद्वि दारियः मल्लमल्लः सचरु हान विपः सागदा रप वमानंदव

॥४॥

क. क. ल. न. पु. द. ग. म. य. ध. स. य. ध. म. ग. ति. ॥ ले ३ ॥ ॥ र. द. ग. म. य. ध. ॥ वृ. का. य. ॥
सं. ज. म. य. वि. म. स. न. र. क. न. क. ॥ व. र्ध. न. व. व. क. ख. ठ. न. उ. ज. ॥ क.
न. म. म. नि. क. न. नि. द. वी. शी. व. स. र. य. द. ॥ २. व. त्म. स. क. ठ. ज. र. य. ध. न. उ. शि. म. ॥ ६०
॥ ॥ वा. म. म. र. द. य. ठ. य. न. ग. ॥ ॥ क. वि. य. श. य. र. य. य. न. म. म. य. र. ॥
क. ध. वि. म. ॥ ॥ न. न. वा. धि. वि. य. द. वि. द. द. व. न. ॥ २. दि. व. ध. व. क. र. ॥

॥४॥

व. ल. दि. द. हि. म. म. ग. ॥ ले ४ ॥ ॥ र. द. ग. म. य. ध. ॥ म. र्ध. न. व. व. क. ख. ठ. न. उ. ज. ॥ क.
वि. र. उ. न. क. म. र. व. २. न. ग. म. क. ॥ ॥ क. म. वि. नि. त. य. न. ॥ क. ॥ न.
म. म. य. व. र. य. वि. म. वि. दि. द. वी. म. ॥
द. य. स. य. ॥ ॥ द. दि. न. क. ॥
यु. पि. द. वी. म. म. न. व. म. ति. ॥ ॥ व. ल. य. वि. नि. व. सि. म. ड. वि. ॥

सोमनाम ४॥

मायालिङ्गिग मुझीमुचवृद्धः ऊनाईवृधुवृद्धः हा नालंङ्गना ॥
॥यवृदिंमवीमवृद्धयवृद्धः
यानरिहताश्चुखीमवीमवृद्धी
लिङ्गनीलयमाद्यगा ॥ ७३ ॥
अयद्गमुज्जवृद्धयिः चक्रावृद्धयवृद्धज्जवृद्धयवृद्धलि

७३

यादिनतामिसायवृद्धमवृद्धकयितवृद्धमालिङ्गयदं ॥ ७४ ॥
आ४५ आ४५ आ४५ ॥ मृग
हायाकावयससाकाकवृद्धद
नख्यवृद्धलीखनलीयवृद्धमृग
मागवृद्धमवृद्धसादियतादवृद्धलीखकालिङ्गकालिङ्गमवृद्धमृगवृद्ध

५३ रुक्मः देवकः आलिगमनीनविर्यं॥	॥ स मल्लसूतसूतसूतदवाचिः
५४ यनादकवीगनसमल्लयुवद	अवधूवययिसयिसदकभी
५५ सत्वयः अतिवगवगमलितः	गमि ॥ १० ॥ ॥ रवाग
५६ रुक्मः दवादिगवयः यवय	किवठिगजचर्मविरुयिमः
५७ सावयिसमरुक्मः नयध्वनत् १० रुक्मवकालिवापीमलवाययियुध	

॥ गमिहंकावा ॥	॥ उथलवाठासमवकवृष्णमयः दहाज
लजलसुहसवधमगमि ॥	गयययानवजवासवधः
रयमिवः कवकलंयः सदक	गुनयकापीवयजानवसद
मिः यव्यसयिवा १० रुक्मसल	नः रुवद्वः १० रुक्मवित्तमनयुध
॥ गमिहंकावा ॥	॥ रुक्मकाधनसयमरु लयः यद्विपु

१३६३३३

श्वस्यस्य इयिवायलः नात्रयागव अहनामा ॥	॥ ॐ नुवली ॐ
इति यात्र दत्त धूप मांसः सा	दिया प्रशदा निद्रु ल्यरु न मीः
धात्रे दानयमि सर्वकार्य सिद्धि	॥ ॥ कर्णिया नि अ धिष्ठा न
लवाली च वरु यरु का प्रशदा	जा दानयमि सुद लिवा नात्र रा
यत्र सखे अनामा ॥ २२ ॥	॥ २ ना रा स ॥ वि ए वा म्हा ऊ च नु ली

२२

मः मंशु ग्रा व ऊ य र्थ क न नु व का र	यि म नि न व क सि न व र्ण य च व र्ण
म कू र य न ॥ ॥ न सा मि र वा	गी म् व वा य ध र्मा म्हा नु म लु ल सि
ता र द व द वा धि द व न य डि म	ख ख वा शु सि धि यु म्हा दा ॥
यु य म वा नि ध सा च क म्हा दि	मि य कू या न य र्थ का र र्थ मि य द
ल वा न वा य ध ना च नु र्थ व द न नु द्वा न्नी ॥	॥ यु न म य म्हा नु म र्हा

आयं वयम्मादासंवाधियाफारुनयि श्रीमिववज्रचिनाः कलकल
 पुस्तकम् ॥ १०० ॥ ॥ न
 नमस्ते वयम्मादासंवाधियाफारुनयि श्रीमिववज्रचिनाः कलकल
 नमस्ते वयम्मादासंवाधियाफारुनयि श्रीमिववज्रचिनाः कलकल
 नमस्ते वयम्मादासंवाधियाफारुनयि श्रीमिववज्रचिनाः कलकल
 नमस्ते वयम्मादासंवाधियाफारुनयि श्रीमिववज्रचिनाः कलकल

७३

द्विदायनाः नोमीनिवृद्धसंयदाननाहं हं ॥ ॥ नमसासि शशीवककम
 लधनाकल्यानकटिसर्वकल
 वासवलेचकधामिना ॥ ॥ नमसासि शशीवककम
 नाः चन्द्रासनविल्वव्यायिगा ॥ ॥ नमसासि शशीवककम
 कथाकसुखदायनि ॥ ॥ नमसासि शशीवककम

स्वमुत्तादाश्नयिनिर्णयकः सिद्धिप्रदायनी ॥ ॥ कायविकचिह्नयव

24

॥ सनमूवीजें ॥ ॥ विविधतरुणसुखिनिदिव्यसुभांलिशितयनरुचि

ॐ दिना

येन सगादि

वेदुगमस्य न

येसागमनि

विषय

हविनि सरवेन

विष्वाक मन

वेदकी गमस्य न

कय विष्वाक

योग न क

नेसा मिथ्यादि न क

नेसा मिथ्यादि न क

योग विष्वाक

योग न विष्वाक

वेदकी ले

वेदकी मधुले

वेदकी मधुले

वेदकी मधुले

वेदकी मधुले

वेदकी मधुले

वेदकी मधुले

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ





